मेअराज की सच्चाई

अल्लाह तआला ने निर्माण के मार्गदर्शन एवं हिदायत के लिए पैगम्बरों को नियुक्त किया। प्रत्येक नबी को इन के दौर के अवश्यकताओं के अनुसार मुअजज़ात प्रदान किए। संप्रदाय जिस कला व फन में उच्चता रखती थी पैगम्बर भी इसी गुण एवं इसी प्रकार से इस प्रतिभा व वैभव का मुअजज़ा पेश करते के सम्पूर्ण सदस्यों की बुद्धि दंग रह जातीं।

क़ियामत के सवेरे तक आने वाली सम्पूर्ण मनुष्य जाति क्यों के सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ही की संप्रदाय है तथा इस संप्रदाय में क्यों के साईन्स व टेकनोलोजी उच्चता पर पहुँचने वाली थी।

अर्थात अल्लाह तआला ने इसलाम को दरपेश होने वाले सम्पर्ण चुनौतियों का उत्तर देते हुए इसलाम की सच्चाई को स्पष्ट कर दिया।

आज साईन्स व टेकनोलोजी उन्नति व प्रगति तय करती हुई इस स्थान पर पहुँच गई है के मनुष्य सूर्य की किरणों को गिरफ्तार कर रहा है। पूर्ण ब्रह्माण की यात्रा करते हुए चाँद तक पहुँच गया है। किन्तु साईन्स एवं विद्वानों ज्योतिर्विद व खगोलज्ञ (खगोल विद्या जानवेला), अंतरिक्ष व बाण-हवाई के वैज्ञानिकों ने अपनी इस आश्चर्यजनक उन्नति के बावजूद सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के मेअराज के मुअजेज़े की प्रतिष्ठा व उत्कृष्टता के सामने बेचार हैं।

आज साईन्स की दुनिया जिस प्रकार उन्नति करती जा रही है इसी प्रकार इसलामी सच्चाई उजागर होते जा रहे हैं। मेअराज की यात्रा के सिलसिले में जो विरोध किया जाता है, ये कैसे सम्भव है के रात के सीमित से हिस्से में इतनी लम्बी यात्रा की गई हो?

न्यायकर्ताओं के पास ये विरोध श्रेष्ठ नहीं, क्यों के मनुष्य की बनाई हुई बिजली की तेजी व गति ये है के वह एक सेकन्ड में 3,00,000 किलोमीटर की यात्रा तय करती है। जब निर्माण की बनाई हुई रोशनी (इलेक्ट्रिसिटी) की शक्ति की प्रतिभा ये है तो अल्लाह तआला ने जिन्हें सरापा नूर बना कर भेजा है इस पूर्ण-नूर की तेजी व ढ़ाल की शक्ति का कौन अंदाज़ा कर सकता है।

अल्लाह तआला ने अन्य पैगम्बरों को भी मेअराज प्रदान किया, किन्तु जिस प्रकार की प्रतिभा व वैभव वाली मेअराज सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को प्रदान की, इस प्रकार की मेअराज किसी और को प्रदान नहीं की।

आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने रात के सीमित से हिस्से में अपने पावन शरीर के साथ जागरूक स्थिति में मसजिद हराम से मसजिद अखसा, आलमे-बरज़ख, पूर्ण कायनात तथा सातों आकाशों की सैर की।

जन्नत व दोज़ख (स्वर्ग व नरक) का दर्शन किया, मलिकाओं के स्थान के प्रकृति की विशिष्टता दर्शन किए। सिद्रतुल मुन्तहा एवं अर्श गए तथा अल्लाह तआला से बेहिजाब हमकलाम हुए तथा अपने माथे की आँखों से अल्लाह तआला के दीदार की विशेष कृपा प्राप्त की।

यहाँ इस धन्य यात्रा में --- सच्चाई व वास्तविकता वर्णन किए जा रहे हैं जिस से मालूम हो के अल्लाह तआला ने अपने हबीब करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की महानता व विशालता को स्पष्ट करने के लिए किस प्रकार प्रबन्ध किया है।

जैसा के अल्लाह तआला का आदेश हैः-

भाषांतरः पवित्र है वह जात जिस ने अपने बन्दे (विशेष हज़रत मुहम्मद मुसतफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) को रात के सीमित से हिस्से में मसजिद हराम से मसजिद अक़्सा तक सैर कराई, जिस के अतराफ हम ने बरकतें रखी हैं, ताकि हम इन्हें अपनी प्रकृति की निशानियाँ दिखाएँ, निस्संदेह वही सुनने वाला देखने वाला है।

(सुरह बनी इसराईलः 17:01)

मेअराज की आयत में एक मनोहर इशारा

मेअराज की घटना में हज़ारों हिकमतें हैं जिन को ज्ञानी व विद्र जानते हैं। सुरह बनी इसराईल की वर्णन आयत में जो मेअराज की घटना का वर्णन किया गया है इस धन्य आयत का आरम्ब शब्द *सुभान* के *सीन* से है तथा अंत *बसीर* की *रे* पर है।

मेअराज की आयत के आरम्भ एवं अंतिम अक्षर को मिलाने से सैर बनता है जिस के अर्थ अरबी भाषा में राज़ के हैं। इस पावन आयत में इस बात की ओर इशारा व संकेत है के मेअराज की घटना – के रहस्यों में विशाल रहस्य है।

जिस की सच्चाई को सिवाए अल्लाह तआला एवं इस के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के कोई नहीं जानता, इसी लिए अल्लाह तआला ने इन रहस्य की बातों को गुप्त रख दिया। फरमाया हैः

भाषांतरः अल्लाह तआला को अपने बन्दे पर जो वही (प्रकाशनी) करना स्वीकार था वह वही की।

(सुरह अन नज्मः 53:10)

सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का मेअराज में अर्श-ईलाही पर जाना ही मुअजेज़ा (करामत व चमत्कार) नहीं है बल्कि आप का वापस आना भी मुअजेज़ा है। क्यों के आप नूर हैं तथा बशरी वस्त्र में यहाँ उजागर हुए हैं, रात के सीमित से हिस्से में उच्च स्थान की सैर करना तथा लामकाँ ले जाना, ये आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की मानवीय प्रतिभा व वैभव का मुअजेज़ा है तथा नूर हो कर लोगों के बीच रहना, व्यापार व मामलात करना आदि ये आप की शाने-नुरानियत का मुअजेज़ा है।

मानवीय की विशेषक प्रतिभा

प्रत्येक व्यक्ति इस बात से स्पष्ट रूप से अनुभव है के मनुष्य को जीवन गुज़ारने के लिए चंद चीज़ों की अवश्यकता होती है, भोजन, वस्त्र एवं मकान, ये जीवन की अवश्यकताएँ कहलाते हैं, जिन पर जीवन निर्भर होता है। ये चीज़ें प्रत्येक प्राणि के जीवन का भाग है।

अल्लाह तआला ने मेअराज की रात सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की मानवीय की विशेषक प्रतिभा को इस रूप से स्पष्ट किया के कोई प्राणि मकान के बिना जीवित नहीं रह सकता तथा – उपयोग किए बिना पूर्ण कायनात (ब्रह्माण्ड) से गुज़र नहीं सकता।

किन्तु सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मेअराज की रात पूर्ण कायनात से गुज़रे तथा लामकाँ पहुँचे। ये आप की मानवीय का गौरव है। इसी प्रकार मनुष्य बिना भोजन नहीं रह सकता। परन्तु सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की करामती प्रतिभा है के आप बिना सेहर व इफ्तार के लगातार रोज़ा रखा करते।

सहाबा किराम भी आप के पालन में लगातार रोज़े रखने लगे तो इन पर कमज़ोरी तारी होने लगी, नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश कियाः

भाषांतरः तुम में कौन मेरी (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) तरह है? मैं अपने पालनहार के पास रात बिताता हुँ, मेरा रब मुझे खिलाता एवं पिलाता है।

(सहीह बुखारी, हदीस संख्याः 1965)

ये एक अटल सच्चाई है के फरिश्ते नूर से उत्पन्न किए गए तथा हज़रत जिब्रील अमीन अलैहिस सलाम सम्पूर्ण फरिश्तों के सरदार व मुख्य हैं। तो स्पष्ट है के वे नुरानियत में सम्पूर्ण मलीकाओं में उच्च हैं, किन्तु हज़रत जिब्रील अमीन अलैहिस सलाम भी मेअराज की रात सिद्रतुल मुन्तहा पर रुक गए तथा निवेदन करने लगेः

या रसूलउल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम! यदि मैं इस स्थान से उंगली के पूर के समान भी आगे बढ़ुँगा तो अल्लाह तआला की तजल्लियों के कारण से जल कर खाक हो जाउँगा। जैसा के तफसीर रूह उल बयान में हैः-

भाषांतरः हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने जिब्रील से फरमायाः क्या ऐसे स्थान पर कोई मित्र अपने मित्र को छोड़ देता है? तो जिब्रील अमीन अलैहिस सलाम ने निवेदन कियाः सरकार! यदि मैं आगे बढ़ुँ तो नूर से जल जाऊँगा, तथा एक रिवायत में हैः यदि मैं एक पूर के समान भी निकट आऊँ तो नाश हो जाऊँगा।

(तफसीर रूह उल बयान, सुरह अल इसराः 01)

अतः नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम सिद्रतुल मुन्तहा से आगे बढ़े।

सोंचिए! जो फरिश्ता नूर से पैदा किया गया इस की जात अल्लाह तआला के नूर के प्रकाशन नहीं, किन्तु सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बशरियत की प्रतिष्ठा ये है के आप सिद्रतुल मुन्तहा से आगे गुज़र गए, प्रतिष्ठित व पवित्र दरवाज़ें, अल्लाह तआला के नूर के प्रकाशन की आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) पर वर्षा होती रहती है।

इस प्रकार मेअराज की यात्रा के द्वारा संसार पर उजागर किया गया के जिब्रील अमीन अलैहिस सलाम मलीकाओं के मुख्य की स्थिति ये है के बावजूद नूरानी होने के इन अल्लाह तआला के नूर के प्रकाशन की ताब ना सके तथा हबीब करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की प्रतिभा ये है के आप प्रत्येक आन अल्लाह तआला से निकटता की मंज़ीलें तय करते हैं तथा आप पर प्रत्येक दम नव तजल्ली व प्रकाशन का प्रकट होता है जैसा के अल्लाह तआला का वचन हैः-

भाषांतरः अए हबीब पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसलल्म! आप की प्रत्येक आने वाली घड़ी (अवधि) पिछली घड़ी से उत्तम है।

(सुरह अज़ ज़ुहाः 93:04)

आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम केवल इन अनवार व प्रकाशन का दर्शन ही नहीं करते बल्कि संप्रदाय को इन के आशीर्वाद व बरकतों से संबोधित भी करते हैं।

नूरानियत की विशेषक प्रतिभा

आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की नूरानियत की प्रतिभा के नूरानी वर्णित हैः-

सरकार पाक सल्ल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की नूरानियत की उच्चता ये है के आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने अपने माथे की आँखों से अल्लाह तआला का दर्शन व दीदार किया, तथा दीदार भी इस प्रतिभा से किया के अल्लाह तआला फरमाता हैः-

भाषांतरः (सत्य के दर्शन के समय) उन की आँख ना किसी और तरह आकर्षित हुई तथा ना हद से बढ़ी (जिस को तकना था इसी पर जमी रही) निश्चय उन्हों ने (मेअराज की रात) अपने रब की बड़ी निशानियाँ देखीं।

(सुरह अन नज्मः 53:17-18)

आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की नूरानियत की विशेषक प्रतिभा वर्णन करते हुए ज़ुबदतुल मुहद्दिसीन हज़रत अबुल हसनात सैय्यद अब्दुल्लाह शाह नक्षबंदी मुजद्दिदी खादरी मुहद्दिसे-देक्कन रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैः

(मेअराज की रात जब आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की सवारी निकली तो) 70,000 फरिश्ते सीधे ओर एवं 70,000 फरिश्ते बायें ओर, प्रत्येक के हाथ में अर्श के नूर की एक एक मशाल (शमादान) थी। बावजूद इस के नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पावन चेहरे के नूर का और ही हाल था। आदेश हुआ जिब्रील! मेरे हबीब के चेहरी पर कई हज़ार परदे पढ़े हुए हैं फिर भी नूर की ये स्थिति है, अच्छा ज़रा एक परदा तो उठाओ! एक परदे का उठना था के नूर के जो लाखों मशालें रोशन व दीप्तिमान थीं हज़रत (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के नूर के सामने कम पढ़ गईं।

(मेअराजनामा, पः 43)

पावन हृदय को स्नान दिया गया

मेअराज की रात सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पावन हृदय को ज़म-ज़म के पानी से धोया गया। आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) का पवित्र सीना चाक किया गया, इमान व हिकमत से आभूषण उस में उँड़ेल दिया गया, जैसा के हदीस पाक में आता हैः-

भाषांतरः फरिश्ते ने यहाँ (सीने० से यहाँ (नाफ) तक चाक किया। एवं इस ने मेरा दिल व हृदय निकाला, फिर मेरे पास सोने का एक तश्त लाया गया, जो इमान से आभूषण था, फिर मेरे दिल को धोया गया तथा (अपने स्थान पर० रख दिया गया।

(सहीह बुखारी, हदीस संख्याः 3887 / मुसनद अहमद, हदीस संख्याः 18312)

जीवन का संबंध दिल से है, हृदय व दिल जीवन का केन्द्र है। कायनात में कोई ऐसा मनुष्य नहीं जो बिना दिल के जीवित रह सके, --- के दौरान भी डाक्टर लोग ऐसा यंत्र का उपयोग करते हैं, जिन की सहायता से वे दिल एवं शरीर के बीच सम्पर्क अवश्य बाखी रखते हैं तथा इन के कारण से मनुष्य जीवित रहता है।

एवं इधर हबीब पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की प्रतिभा ये है के आप का पावन सीना चाक किया गया, ज़म-ज़म के पानी से पवित्र दिल को धोया गया, अनवार व हिकमत के तश्त उँडेले गए, इन सम्पूर्ण चीज़ों की सूचना खूद नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने प्रदान की है।

जीवन का केन्द्र मन बाहर निकाले जाने के बावजूद दस्तूर के अनुसार आप जीवित रहे, मालूम हुआ के जीवन के साधन ज़ाहिर रूप से निकालने से आप के ज्ञान एवं पावन जीवन में कोई अंतर नहीं आता।

इस स्थान पर विस्तार व हदीस, इतिहास की किसी पुस्तक में इस क्रिया का वर्णन नहीं मिलता के पावन सीना चाक किए जाने पर आप के पवित्र शरीर से खून का खतरा निकला हो।

क्यों के सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम नूर भी हैं तथा बशर भी, खून का निकलना मानवीय (बशरियत) के लक्षण है तथा कून का ना निकलना नूरानियत के लक्षण हैं। आप का पावन शरीर इसी प्रकार पावन हृदय पवित्र सीने से निकालने के बाद भी दस्तूर के अनार जीवित रहना, आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की मानवीय का मुअजेज़ा है, अर्थात आप की प्रतिभा नूरानियत भी बेमिसाल एवं बशरियत (मानवीय) भी बेमिसाल।

ज्ञान में कृपा में प्रत्येक गुण में सब से उच्च
शाहे-कौनेन को प्रत्येक प्रतिभा में एकता देखा

(लेखक)

शैखुल इसलाम आरिफ बिल्लाह इमाम मुहम्मद अनवारुल्लाह फारूखी, प्रवतर्क जामिया निज़ामिया रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैः

विश्वास ये खुलता नहीं के कौन हैं तथा क्या हैं वे
हाँ समझते हैं बस इतना बरज़क़ कुबरा हैं वे

मेअराज की यात्रा की हिकमत

युँ तो सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के प्रदान से फर्श धरती पर रह कर प्रकृति के अनोखे एवं उच्च स्थान की सच्चाई को अपनी नूरानी आँखों से देखा करते हैं, जन्नत व दोज़ख का दर्शन करते हैं।

जब नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को आकाश के ब्रह्माण की यात्रा करवाए बिना, अल्लाह तआला धरती पर ही आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को उच्च स्थान व मकाँ की स्थान एवं जन्नत व दोज़ख का दर्शन करवाता है।

जैसा के सहीह बुखारी में हदीस पाक है केछ-

भाषांतरः नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने कुसूप की नमाज़ संपादन की, सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने निवेदन कियाः या रसूलउल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम! हम ने आप को देखा के आप किसी चीज़ को अपने धन्य हाथ में ले रहे है फिर आप पीछे की ओर गए, तो नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश कियाः निश्चय मेरे सामने जन्नत पेश की गई तथा मैं ने इस से अँगूर का दाना लेने का उद्देश्य किया (फिर मैं ने इस उद्देश्य को छोड़ दिया) एवं यदि मैं इस को ले लेता तो तुम रहती दुनिया तक इसे खाते रहते वह कभी समाप्त ना होता।

(सहीह बुखारी, हदीस संख्याः 706)

स्पष्ट हुआ के जब नबी रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम धरती पर रह कर आकाशी ब्रह्माण का दर्शन करते हैं तो फिर आप को मेअराज की रात आसमानों पर क्यों बुलाया गया?

वास्तव में इस में अल्लाह तआला की हिकमत व मंशा ये है के प्रकृति के अनोखे का दर्शन एवं मलिकाओं के स्थान की सैर के अतिरिक्त अपनी विशेष निकटता से संबोधित कर के वार्तलाप की कृपा से आभूषण कर के सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के स्तर व स्थान को सम्पूर्ण निर्माण पर उजागर करना भी उद्देश्य था।

दुसरा कारण ये है के नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम लगातार धर्म के प्रचार व प्रसार करते रहे तथा लोगों को सत्य धर्म की ओर निमन्त्रण देते रहे। -- ने आप के धन्य दामन से सम्पर्क प्राप्त की, किन्तु अज्ञात --- लोगों की --- सत्य के निमन्त्रण से मुँह मोड़ लिया तथा सत्य धर्म से उद्देश्य को दर्शन करने के बाद सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अल्लाह के सन्देश तथा इसलाम के निमन्त्रण देने के लिए ताईफ की ओर यात्रा की।

वहाँ आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने इसलाम का निमन्त्रण दिया, परन्तु ताईफ के निवासियों ने इमान लाने के बजाए आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के साथ अनेक प्रकार की शरारतें कर दी, आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) पर पत्थर बरसाए जिस से आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) का धन्य क़दम खून-खून हुए तथा आपकी पवित्र चप्पल खून से बर गए।

ताईफ की धरती में दी गई तकलीफों तथा कठिनाइयों से हबीब पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पावन हृदय पर दुःख तारी था। अल्लाह तआला ने अपने हबीब पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को इस से दूर करने तथा आप को विजय प्रदान करने के लिए तथा सर्व निर्माण पर आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की मंज़िल व स्तर उजागर करने तथा अनवार के दर्शन से संबोधित करने के लिए अपने विशेष निकटता में चाहा, ताकि संसार वालों के सामने आप की गुप्त प्रतिभा एवं आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) का स्तर व स्थान प्रकट हो जाए के जिन धन्य क़दमों को ताईफ की धरती पर घायल किया गया ये वे धन्य क़दम हैं के अल्लाह तआला का अर्श भी इन को चूम कर बरकतें व आशीर्वाद प्राप्त करता है एवं रूहुल अमीन भी अल्लाह तआला की निकटता में रहने के बावजूद बरकतों के सिलसिले में इन धन्य क़दमों के निर्धन है।

हज़रत जिब्रील अलैहिस सलाम जिस प्रकार सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थिति को कृपा का माध्यम समझते इसी प्रकार अपने स्थान सिद्रतुल मुन्तहा में नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के आने को बरकत व कुशलता का माध्यम जानते हैं।

मुल्ला मोइन काशफी हरवी --- रहमतुल्लाहि अलैह ने *मआरिज उल नबूवत* में रिवायत वर्णन की हैः-

भाषांतरः जिब्रील अलैहिस सलाम ने निवेदन कियाः या रसूलउल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम! मेरी आप से एक विनती है। सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमायाः कहो! वह क्या है? उन्हों ने निवेदन कियाः मेरी इच्छा है के आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) 2 रकात नमाज़ संपादन करें ताकि मेरा निवास स्थान आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के पावन क़दम की बरकत से आभूषण हो जाए।

(मआरिज उल नबूवत, पः 931)

बुर्राख के चुनाव की हिकमत

इस पावन यात्रा के लिए दस्तूर के अनुसार अल्लाह तआला बजाए बुर्राक के किसी और सांसारिक सवारी जो अरब में उपयोग की जाती थी उसे रवाना कर देता, या इस सवारी में में तेज़ी उत्पन्न कर देता तथा उसे भेज देता या भविष्य काल में जो तेज़ रफ्तार सवारियाँ उत्पन्न होंगी उन्हें रवाना कर देता।

परन्तु ऐसा नहीं किया बल्कि जन्नती बुर्राख पेश किया ताकि पता चले बेमिसाल हबीब पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के लिए सवारी भी ऐसी बेमिसाल पेश की जाती है के आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि

वसल्लम) से पूर्व किसी ने इस पर सवारी की है एवं ना आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के बाद दुनिया में किसी और को ऐसी सवारी प्रदान की जाएगी तथा भविष्य काल में उत्पन्न होने वाली तेज़ रफ्तार सवारियाँ पेश की जातीं तो भविष्य में लोग उन्नति व प्रगति कर के इस जैसी सवारी पर सवार होते, इसी लिए अल्लाह तआला ने हबीब पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के लिए जन्नती सवारी का चुनाव किया के इस जैसी सवारी पर संसार में कोई सवार ना हो सके।

बुर्राख पर सवारी सरकार के लिए

बुर्राख एक जन्नती सवारी है। आप की पावन सेवा में बुर्राख की सवारी पेश की गई। बजाए इस के ये भी हो सकता था के आप के लिए जगह व दूरी लपेट दिया जाता, धरती समेट दी जाती तथा आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) का एक धन्य क़दम मक्के में होता तथा दुसरा धन्य क़दम मसजिद अख्सा में किन्तु सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के लिए ऐसा नहीं किया गया।

इस में हिकमत ये है के जगह व दूरी को लपेटना ऑलिया किराम में भी है। इस के विरुद्ध ऐसी सवारी का होना जो दिन में लम्बी दूरी को तय करे ये लोग अम्बया अलैहिस सलाम की विसेषज्ञ प्रतिभा है।

दुसरा कारण ये है के बुर्राख सवारी की अवश्यकता होने की बिना पर नहीं लाई गई। बल्कि बुर्राख को कृपा प्रदान करने के लिए तथा आप की प्रतिभा व गौरव के प्रदर्शन के लिए भेजी जाती है।

इस में मेहमान का आदर व सम्मान उद्देश्य होता है, इसी प्रकार अल्लाह तआला ने अपने बेमिसाल हबीब पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को बुलाया तो ऐसी सवारी भेजी जिस पर कोई प्राणि सवार नहीं हुआ।

भाषांतरः धरती समेटने पर प्रकृति के बावजूद सवारी के द्वारा सैर कराने में हिकमत ये है के ये घटना मुअजेज़े (करामत व चमत्कार) के प्रकट के स्थान पर रिवाज व रिवायत के अनुसार स्पष्ट हुआ, क्यों के सामान्य रूप से रिवाज यही है के राजा किसी व्यक्तित्व को सचेत करता है तो इस के पास अपने राजदूत के साथ उच्च सवारी भेजता है।

(मवाहिब लदुन्निया मअ शरह ज़ुरखानी, जिल्द 08, पः 70)

नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के मसजिद अखसा जाने की हिकमतें

निश्चय सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मेअराज की यात्रा के अवसर पर बैतुल मखदस गए। यहाँ ये प्रश्न उत्पन्न होता है के जब आप को आकाशी ब्रह्माण्ड की यात्रा करवाना उद्देश्य था। एवं अल्लाह तआला से वार्तालाप एवं दीदार व दर्शन की कृपा से धनी करना था तो फिर आप को सीधे आकाशों पर क्यों नहीं ले जाया गया। बैतुल मखदस क्यों ले जाया गया, तो इस की हिकमत ये वर्णन की गई केः-

प्रथम हिकमतः हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को मेअराज की रात मसजिद अखसा इस लिए ले जाया गया के काफिरों को सत्यता की दलील हो, क्यों के आकाशों की निशानियाँ काफिरों की देखी हुई नहीं थी।

वे आप के मेअराज का मुअजेज़ा अनुमोदन किस प्रकार करते। क्यों के उन्हों ने मसजिद अक़्सा देखी थी, आप से मसजिद अक़सा की निशानियाँ पूछीं। आप ने मसजिद अक़्सा की निशानियाँ तथा रास्ते में मिलने वाले क़ाफिलों की स्थिति बता दिए ताकि आप की सत्य सूचना के अनुसार काफिरों पर दलील स्थापित हो जाए।

(सुबुलुल हुदा विर्रशाद, जिल्द 01, प्रश्नः- 17)

बैतुल मक़दस की आरज़ू

दूसरी हिकमतः इमाम मुहम्मद बिन यूसुफ सालेह रहमतुल्लाहि अलैह कहते हैः सीरिया देश में क़ियामत का मैदान स्थापित होगा तथा मेअराज में नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को बैतुल मक़दस ले जाने में अल्लाह तआला का मंशा ये था के जब आप के धन् क़दम को वहाँ पढ़ जाएंगे तो कल क़ियामत के दिन आप की उम्मत व संप्रदाय के लिए सरलता व सुविधाएँ उपलब्ध आ जाएगी तथा आप के पावन क़दमों की बरकत के कारण वहाँ पर ठहरना आसान हो जाएगा।

(सुबुलुल हुदा वर्रशाद, जिल्द 03, पः 180

तीसरी हिकमतः जो हज़रत मुहद्दिस देक्कन रहमतुल्लाहि अलैह ने वर्णन की है, आप ने लिखा हैः इस का एक कारण तो ये है के बैतुल मक़दस प्रत्येक समय दुआ करता था के इलाही! सम्पूर्ण पैगम्बरों से मैं संबोधित हो चुका, अब मेरे दिल में कोई आरज़ू बाखी नहीं है, यदि है तो ये है के हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पावन क़दम देखुँ इन की मुलाकात के शौक़ की आग अत्यन्त भड़क रही है। बैतुल मक़दस की आरज़ू पूरी करने के लिए बैतुल मक़दस ले जाया गया।

(मेअराजनामा, पः 29)

जिब्रील अमीन के उच्च शिष्टाचार

मेअराज की रात हज़रत जिब्रील अमीन अलैहिस सलाम ने उच्च शिष्टाचार का विशाल उदाहरण पेश किया। जब वे हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पावन दरबार में उपस्थित हुए तो स्वभाव के अनुसार दरवाज़े की ओर से नहीं आए, बल्कि घर की छत से प्रवेश हुए, एवं शासन तो ये हैः

भाषांतरः और तुम गरों में उन के दरवाज़ों से प्रवेश हो।

(सुरह अल बक़रहः 02:189)

इस का एक कारण ये है के फरिश्ते का आदत के विरुद्ध गैर-स्वभाव रास्ते अपनाने में इस ओर इशारा है के ये यात्रा भी असाधारण एवं आदत के विरुद्ध है तथा छत को शख कर के उपर की ओर से प्रवेश होने में इशारा है के आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की यात्रा उच्चता व उत्तमता वाली है।

फरिश्तों के सरकार का चेहरा पैगम्बरों के सरदार (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के धन्य तलवों पर

मेअराज की रात जिब्रील अलैहिस सलाम ने सरवर कौनेन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की सेवा की विशाल कृपा प्राप्त की, जैसा के तफसीर रूह उल बयान में हैः-

भाषांतरः मेअराज की रात जिब्रील अलैहिस सलाम, मीकाईल अलैहिस सलाम एवं इसराफील अलैहिस सलाम सेवा में उपस्थित हुए तथा इन में प्रत्येक के साथ 70,000-70,000 फरिश्ते थे। जब सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम बुर्राख पर सवार हुए तो जिब्रील अलैहिस सलाम बुर्राख की लगाम थाम लिए, मीकाईल अलैहिस सलाम रिकाब पकड़े, तथा इसराफील अलैहिस सलाम ग़ाशिया पकड़े रहे।

(तफसीर रूह उल बयान, जिल्द 05, पः 109)

मेअराज की घटना के अवसर पर सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के दरबार में जिब्रील अलैहिस सलाम के उच्च शिष्टाचार से उच्च आदर्श मिलता है।

मुल्ला मोइन काशफी हरवी रहमतुल्लाहि अलैह ने मेअराज की रात जिब्रील अलैहिस सलाम की उपस्थिति की स्थिति से संबंधित रिवायत वर्णन की हैः-

भाषांतरः हिकमत का ज्ञान नहीं था, इस की हिकमत मुझे मेअराज की रात मालूम हुई, वे इस प्रकार के मैं आनन्द के बावजूद सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को उठाने में संपादन कर रहा था तथा चिन्तित था के किस प्रकार उठाऊँ। मुझे आदेश हुआ के अपने चेहरे को आप के पाए मुबारक के तलवे पर मस करूँ, जब मैं ने अपने चेहरे को धन्य पाए पर मला, काफूर की हरार के साथ मली, नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम इस्तेराहत के सपने से सुविधा से उठे, इस समय मुजे अपने काफूर से पैदा किए जाने की हिकमत मालूम हुई।

(मआरिज उन नबूवह, पः 601)

यात्रा का आरम्भ उम्मे हानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के मकान से क्यों?

मेअराज के इस धन्य यात्रा का आरम्ब सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पावन भवन से नहीं बल्कि हज़रत उम्मे हानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के मकान से हुआ। इस की हिकमत ये है के हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पावन दर के शिष्टाचार ये हैं के आप के दर में बिना आज्ञा प्रवेश होना निषिद्ध है।

सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के उच्च दरबार के शिष्टाचार के वर्णन में क़ुरान पाक निम्नलिखित हैः-

भाषांतरः ऐ ईमानवालो! नबी (अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के पावन घर में अनुमति बिना प्रवेश ना हो।

(सुरह अल अह्ज़ाबः 33:53)

तथा इस आदेश में फरिश्ते भी शामिल है, क्यों के सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम सम्पूर्ण निर्माण की ओर नबूवत व रिसालत की प्रतिभा के साथ भेजे गए हैं जैसा के सहीह मुसलिम में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः एवं मैं सम्पूर्ण निर्माण की ओर रसूल बना कर भेजा गया हुँ।

(सहीह मुसलिम, जिल्द 01, पः 199, हदीस संख्याः 523 / मुसनद इमाम अहमद, मुसनद अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, हदीस संख्याः 8969 / ज़ुजाजातुल मसाबीह, जिल्द 05, पः 08)

ह्ज़रत मुल्ला अली खारी रहमतुल्लाहि अलैह ने मिरखात में इसकी शरह (निर्वचन) करते हुए लिखा हैः-

भाषांतरः मैं सम्पूर्ण कायनात, जिन्न व मानव जाति, फरिश्ते, हैवानों, जमादात सब की ओर रिसालत व नबूवत के साथ भेजा गया हुँ।

(मिरखातुल मफातीह, किताब उल फज़ाईल)

इसी लिए फरिश्तों के लिए भी जायज़ नहीं के वे बिला आज्ञा आप के पावन दर में प्रवेश हों। मेअराज की रात आप अपने धन्य भवन में विश्राम नहीं किए बल्कि ह्ज़रत उम्मे हानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के मकान गए ताकि फरिश्ते दरबारे-मुसतफा के शिष्टाचार एवं अल्लाह तआला के मंशे के अनुसार पावन सेवा में उपस्थित हो।

बन्दा जबा इबादत में व्यस्त रहता है तो वे अल्लाह तआला के विशेष निकटता में होता है, नमाज़ी जब नमाज़ में होता है तो जैसे वे अपने

अल्लाह तआला से मुनाजात करता है। एवं सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फरमाते के कथन हैः-

भाषांतरः बन्दा अपने रब से इश समय अधिक निकटता में होता है जब वह सजदे की स्थिति में हो।

(सहीह मुसलिम, हदीस संख्याः 875)

परन्तु अल्लाह तआला ने अपने हबीब पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को किसी विशेष इबादत की स्थिति में मेअराज का सन्देश नहीं भेजा बल्कि आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के विश्राम करने की स्थिति में जिब्रील अमीन को भेजा। जैसे के मेअराज की यात्रा प्रथम से अंत जागते में हुई किन्तु जिब्रील अमीन मेअराज का सन्देश उस समय ले कर उपस्थिति हुए जब के आप विश्राम कर रहे थे।

इस में इस बात की ओर इशारा है के अल्लाह तआला अपने नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के विश्राम करने की अदा को भी इस प्रकार प्रिय रखता है के इस में अपने संबोधन की वर्षा करता है।

विश्राम की स्थिति में अल्लाह तआला की निकटता की ये प्रतिभा है, अल्लाह तआला के दरबार से एक विशाल यात्रा के लिए सन्देश मिलता है तो फिर वह नबी पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम जब कअबे के तवाफ में होते हैं, ज़िक्र व दुआ में व्यस्त रहते हैं, अल्लाह तआला के दरबार में विराम होते हैं, धर्म के प्रचार की ज़िम्मेदारी परिणाम देते हैं तो इस समय किसी प्रकार के करामतों व पुरस्कारों की लगातार वर्षा होती रहती है।

एवं सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का विश्राम करना भी इस प्रतिभा व वैभव का है के आप फरमाते हैः-

भाषांतरः मेरी आँख सोती है तथा मेरा हृदय जागता रहता है।

(सहीह बुखारी, किताब उल मुनाखिब, हदीस संख्याः 3304)

इसी लिए आप ने फरिश्ते के प्रवेश होने एवं शिष्टाचार के निराले अंदाज़ को भी वर्णन किया। क्यों के साधारण लोग की नीन्द उपेक्षा की होती है तथा पैगम्बरों (अलैहिस सलाम) की नीन्द की स्थिति व जागरुक दोनों एक ही हैं।

इस प्रकार आप ने रात के सीमिस से हिस्से में मेअराज की यात्रा तय किया। अल्लाह तआला ने आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) को इन उच्च स्थान व स्तर पर आभूषण किया के मानव बुद्धि इन को समझ भी नहीं कर सकती।

अल्लाह तआला से दुआ है के हमें सत्य कहने सत्य सुनने एवं सत्य पर कर्म रकने की मार्गदर्शन प्रदान करे।

आमीन